Geographical Account of NILE BASIN

Contd:- S. Majumdar

2) आस-सड या दलदली प्रदेश → यह सड या दलदली प्रदेश जुबा से शुरू होता है एवं पलाकल तक विस्तृत है, यहीं पर उ० इथियोपिया पठार से सोबत नदी पश्चिम की ओर बहती हुई नील में मिलती है, यहाँ नील का नाम बहर-जल-जेबेल है, आस-सड प्रदेश में नील को पर्वतीय नील भी कहते हैं, इस सम्पूर्ण प्रदेश में चिकनी मिट्टी के जमाव दलदल का निर्माण करती है, हालाँकि प्रदेश में कृषि योग्य बनाया गया है जिससे दलदली प्रदेश घटता गया है, यहीं से नील नदी श्वेत नील या अल-बहर-अल अधियाद के नाम से जाना जाता है,

3) श्वेत नील घाटी → श्वेत नील दक्षिण से उत्तर दिशा में मालाकम से अल-खारतूम की घाटी को कहते हैं, यहाँ नील धीमी गति से सीधे मार्ग पर बहती है, यही मार्ग सूडान का सर्वश्रेष्ठ तथा उपयोगी मार्ग है, अल खारतूम के पास इथियोपिया उच्च भूमि से नीली नील आकर श्वेत नील में मिलती है- जिसे संयुक्त नील कहा जाता है, श्वेत एवं नीली नील के बीच के दोआब को अल-गजीरा कहा जाता है,

4) नीली नील की घाटी → यह नदी, नील नदी में सर्वाधिक पानी लाने वाली सहायक नदी है, इस नदी का जल एकदम स्वच्छ रहता है, इसका उद्गम टाना झील से मध्यवर्ती इथियोपिया के ऊँचे भाग से होता है, यह नदी शुरूआत में अण्डाकार एवं घुमावदार मार्ग से बहती है, बाद में अन्य सहायक नदियों के साथ मिलकर दक्षिण से उत्तर दिशा में बहती हुई अल-खारतूम के निकट पूर्वी तट की ओर गुरुत्व नील में मिल जाती है,

5) खारतूम से वादी हाफा तक संयुक्त नील की घाटी →

खारतूम से अबुहमद तक नदी बल खाती हुई समतल प्राय: निम्न पहाड़ी भाग में बहती है, यहीं पर पूरब की ओर से सहायक नदी अतबारा आकर मिलती है। इस प्रदेश का पूर्वी भाग ऊँचा एवं कगारी है पश्चिमी भाग, निम्न अवसादी जमाव सहित समतल प्राय: है।

6) मिस्र में नील की मुख्य घाटी → मिस्र की दक्षिणी सीमा पर वादीहाफा के पास नदी का शुरुआती नाम आस्वान है यहीं विश्व का सबसे ऊँचा बाँध आस्वान बाँध है। यहीं मिस्र एवं सूडान की सीमा पर विशाल नासिर झील स्थित है यहाँ के बलुआ पत्थर वाली चट्टानी प्रदेश होते हुए नदी बहती है, मिस्र का प्राचीन बसाव एवं प्राचीन सभ्यता का प्रदेश भी यहीं पर स्थित रहा है। मिस्र का आस्वान से लेकर काहिरा तक का भाग सबसे उपजाऊ, घना आबाद एवं मुख्य अर्थतंत्रिक मेरुदण्ड स्वरूप है।

7) नील नदी का डेल्टा प्रदेश → नील नदी का डेल्टा काहिरा से समुद्र तक सिकन्दरिया एवं दुमयात के बीच विस्तृत है, हजारों वर्ष पूर्व यहाँ खाड़ी थी जो नील नदी के अवसादों के भरने से दो नदी शाखाओं के बीच डेल्टा का निर्माण करती है, यह भी अफ्रीका महाद्वीप का सर्वोत्तम विकसित, सघन आबादी वाला प्रदेश है, जिसका क्षेत्रफल २० हजार वर्ग Km है।

सांस्कृतिक दृश्यभूमि (CULTURAL LANDSCAPE)

कृषि एवं सिंचाई → सम्पूर्ण नील बेसिन में सूडान एवं मिस्र देश है कृषि की दृष्टि से विकसित है। सूडान के मध्य एवं उत्तरी आर्द्र एवं शुष्क जलवायु वाले प्रदेशों में मौसमी तथा

तथा सिंचाई की सहायता से फसल उगाया जाता है। प० सूडान में कृषि का विकास कम हुआ है। यहाँ कपास, गन्ना, सोर्घम, गेंहू, तिल, मूँगफली आदि उगाया जाता है। दलदली प्रदेशों के कुछ हिस्सों में चावल की खेती भी की जा रही है। सूडान में कृषि विकास का प्रमुख कारण नील नदी ही है। ठीक इसी प्रकार मिस्र में भी कृषि नील नदी की देन है। यहाँ सिंचाई सुविधा के कारण कृषि में और प्रगति हुई है। यहाँ कपास उत्पादन के अलावा, नारंगी, चावल उगाए जाते हैं। खजूर, जैतून, अंगूर, अंजीर आदि भी यहाँ उगाए जाते हैं। कृषि के साथ पशुपालन भी अब महत्वपूर्ण हो गया है। कई जगहों पर बाँध तथा नहरें बनाकर कृषि को बढ़ाया गया है। इन नहरों की मदद से अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में भी यह प्रदेश भारी दावा करता है। जैसे काहिरा से पोर्ट सईद एवं स्वेज नहर तक मीठे पानी की नहर ले जाई गई है।

पशुपालन की दृष्टि से यहाँ गाय, बैल, भैंस इत्यादि पाले जाते हैं। जो कृषि कार्य तथा दुग्ध उत्पादन व्यवसाय में मदद करते हैं। मिस्र में ऊँटों की संख्या अधिक है। बोझ ढोने में भी इनकी सहायता ली जाती है।

खनिज सम्पद → खनिज की दृष्टि से नील नदी बेसिन सम्पन्न नहीं है। नील की उत्तरी घाटी में यथा - युगाण्डा, रुआण्डा एवं निकटवर्ती भागों में धात्विक खनिज सीमित मात्रा में मिलती है। यहाँ ताँबा, जस्ता, टिन, कोबाल्ट, यूरेनियम जैसे खनिजों के अलावा प० भाग में रॉक फास्फेट पाए जाते हैं। सोने के भी यहाँ सीमित भंडार पाए जाते हैं। सूडान के पूर्वी भागों में उपरोक्त के अलावा सीमित कोयला, जिप्सम, अभ्रक, क्रोमाइट, मैंगनेसाइट, एस्बेस्टस भी पाए जाते हैं। लौह अयस्क एवं मैंगनीज के भंडार भी बहुत सीमित मात्रा में पाए जाते हैं।

सूडान की ही तरह मिस्त्र में भी खनिज संसाधन सीमित मात्रा में ही पाए जाते हैं, यहाँ बहुत ही सीमित मात्रा में नमक, सीसा, जस्ता, लौह अयस्क क्रोमाइट, जिप्सम, सोना, खनिज तेल पाए जाते हैं, लौह अयस्क, कोयला आदि के अभाव के कारण ही यहाँ आधारभूत एवं भारी उद्योग का विकास कम हुआ है।

1970 के बाद से खनिज तेल का उत्पादन बढ़ा है, थोड़े बहुत महत्वपूर्ण या आधार-भूत खनिज, रसायन उद्योग हेतु कच्चा माल एवं अन्य खनिज संसाधन विदेशों से आयात कर प्रयोग में लाए जाते हैं।

contd:—